Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
ISSN: 2454-8367
Vol. 3, Issue-I
July 2017
Impact Factor : 4.032 (IIJIF)
UGC Approved e-Journal No. - 43919
e-ISJN: A4372-3118

जाति, लिंगभाव, पितृसत्ता एवं धर्म : स्त्री छवी के संदर्भ में

लक्षेश्वरी कुर्रे
सहायक प्राध्यापक
विभाग– हिन्दी
शासकीय महाविद्यालय, तमनार जिला रायगढ़ (छ.ग.)

सारांशः–

यह शोध निबंध भूतकाल और वर्तमान समय में नारी की छवी के संदर्भ में कुछ बातों को स्पष्ट करने का प्रयास कर रहा है कि कैसे भूतकाल में नारी की स्थिति दैयनीय एवं निदनीय थी और वर्तमान समय में भी काफी हद तक ज्यूं–की–त्यूं बनी हुई है। भारतीय समाज में नारी की स्थिति खराब और दैयनीय होने का मुख्य कारण पितृसत्तात्मक समाज और मनुवाद उसके लिए जिम्मेदार है। यह षोध नारियों के हालातों खासकर जाति विशेश दलित आदिवासी और अल्पसंख्यक होने की वजह से भी पितृसत्तात्मक समाज में होने वाले दोहरे शोषण के दुष्परिणामों की भी ऊपरी तौर पर चर्चा करता है। धर्म की अवधरणाएँ भी नारी को आगे बढ़ने से रोकता रहा है और कभी–कभी इतना आक्रमक भी हो गया की नारी के अस्तित्व को ही समाप्त कर दिया। लिंगभेद की शिकार तो नारी प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय में भी हो ही रही है। यह शोध कुल मिलाकर जातिभेद, धर्मगत, लिंगभेद और पितृसत्तात्मक समाज की धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक कारणें नारी को अस्तित्व अस्मित्ता और अपनी व्यक्तित्व निर्मण करने के मार्ग में अवरोध उत्पन्न कर आगे बढ़ने से कैसे रोके रखा है इन सभी बातों और कारणों को उजागर करता है।

बीज शब्दः– भारतीय नारी, धर्म–जाति, पितृसत्तात्मक समाज और लिंगभेद ।

भारतीय संस्कृति में आदिकाल से नारी पितृसत्तात्मक समाज में लिंगभेद का शिकार होती रही है। और वर्तमान समय में भी नारियाँ प्रत्येक क्षेत्र में अपना मुकाम हासिल करने के बावजूद भी लिंगभेद का शिकार होती नजर आ रही रही है। पुरूषवादी विचारधारा वाले समाज में नारी लिंग, जाति और धर्म के आधार पर हमेशा शोषित होती रही है। क्योंकि पितृसत्तात्मक समाज में नारी को पारम्परिक रूढियों, अन्धविशवासों, मान्यताओं के शोषण से मुक्त कर उसे स्वतंत्र रूप से व्यक्तित्व निर्माण कर समाज में प्रतिष्ठित होने ही नहीं दिया गया और हमारी सामाजिक व्यवस्था नारी को सिर्फ भोग्या मानकर सम्भोग और संतान प्राप्ति का एक माध्यम के रूप में ही स्वीकार किया। राजेन्द्र यादव कहतें हैं–''औरत पुरुष के लिये सुमुखी पयोधरा, क्षीण कटि, बिल्वस्तनी, सुभगा भगवती है।''[1] पितृसत्तात्मक समाज ने नारी को केवल भोग विलास का वस्तु ही माना है। भारतीय संस्कृति में नारी के प्रति दोहरे मापदण्डों का प्रावधान प्रारम्भ से ही रहा है क्योंकि पुरूषसत्तात्मक समाज स्त्री को उतना ही अधिकार देता है जिससे स्त्री को अपने अधीन बनाकर रखा जाये और जिम्मेदारियों, पितृक नैतिकता, शील, मातृत्व का निर्वाह कर विवेकहीन, सहनशील, सर्म्पण,

Jai Maa Saraswati Gyandayini ISSN: 2454-8367
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Vol. 3, Issue-I
July 2017
Impact Factor : 4.032 (IIJIF) UGC Approved e-Journal No. - 43919 e-ISJN: A4372-3118

त्याग करने वाली आदर्शवादी बनी रहे जिससे पुरूष उसका आसानी से अपने अनुरूप इस्तमाल कर सके। इसके लिये बचपन से ही स्त्री को अनुकूलित कर शोषण के ढाँचे में ढालकर शोषित होने के लिये तैयार किया जाता रहा है जिसके फलस्वरूप नारी ताउम्र शोषित होती रहे और अपने मुक्ति के बारे में सोचे भी नहीं है। सिमोन द बउवार कहती हैं–''औरत को औरत होना सिखाया जाता है और बनी रहने के लिये उसे अनुकुलित किया जाता है। तथ्यों के विश्लेषण से समझ में आयेगा कि प्रत्येक मादा वह औरत होना चाहती है तो उसे तपने की रहस्यमय वास्तविकता से परिचित होना पडेगा।'' 2

भारतीय संस्कृती प्रारम्भ से ही स्त्री के प्रति असंवेदनशील और उत्पीड़क विचारधारा वाला रहा है क्योंकि पुरुष समाज की दृष्टि में जो नारी शील, नैतिकता, मर्यादा, मातृत्व और सैक्स आदि सभी प्रतिमानों को पूरा निष्ठा से स्वीकार कर त्याग और सम्पर्ण की मूर्ति बनकर जीवन व्यतित करती है। वही सर्वोच्च और आदर्श नारी के रुप में स्वीकार की जाती है। पितृसत्तत्मक समाज की इसी अनुशासन के बारे में तसीलमा नसरीन लिखती है कि – ''जो औरत पुरुष के बनाये हुये धर्म और कानून के पिंजडे में स्वयं को बंदी रखती है या अपने को विसर्जित करती है उसे सभी अच्छी कहते हैं। सभी उसकी प्रषंसा करते हैं। यह भी पुरुष तंत्र का कौशल है कि जो स्त्री पिंजडा तोडकर बाहर आती है उसे अश्लीलता का दोषी ठहराया जाता है। उसे सामाजिक बहिष्कार का शिकार होना पडता है, मालों किसी भी स्त्री के लिए पारिवारिक पिंजडा ही उसका परम अराध्य हैं।''[3] पितृक अनुशासन को सहन करते –करते स्त्री इतनी अभयस्त हो गयी है कि इसे ही अपना परम धर्म और कर्तव्य मनने लगी है। असुरक्षा और भय की भावना से भरकर आदर्श नारी बने रहने के कारण वर्चस्ववादी नियमों के अनुरूप चलती रही है जेा नारी को अस्मिताहीन, वाणी विहिन और भोग विलास की वस्तु बनाता रहा है–''मनु ने नारी को कहीं देवी भले ही कह दिया हो मगर उसने नारी को संतान उत्पादन की भूमि के सिवाय और कुछ नहीं समझा, संतान जो पुरुष द्धारा संपत्ति का उपयोग करे उसने नारी को हीन कीड़ा समझा।''[4]

विकसित हो या विकासशील सभी देशों में नारी लिंगभेद का शिकार होती आ रही है इसलिए तो नारी के व्यक्तिगत जीवन को व्यभिचार, अनैतिकता, पाप और अपराध की श्रेणी में रखकर उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व विकास के मार्ग में अवरोध उत्पन कर उसका अस्तित्व को ही नकार दिया जाता है। स्त्री की पवित्रता नैतिकता शील मर्यादा और मातृत्व को ही श्रध्दा के रूप में देखता है और पुरुषवादी वर्चस्व को बनाये रखने के लिये नारी को हमेशा प्रताडित करता रहता है। राजेन्द्र यादव लिखते हैं –''इस संवेदनहीनता और आडबर की शिकार रही है स्त्री। उसे वर्ग–वर्ण की सीमाओं के साथ सेक्स के धरातल पर मानव कल्याणी शास्त्र और मनोवृत्तियेां को भी भुगतने वाली नियति को स्वीकार करने की छूट दी गयी है। वह पुरूष की मर्यादा है यानी वर्चस्व

Jai Maa Saraswati Gyandayini ISSN: 2454-8367
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Vol. 3, Issue-I
July 2017
Impact Factor : 4.032 (IIJIF) UGC Approved e-Journal No. - 43919 e-ISJN: A4372-3118

व्यवस्था की सारी नैतिक मर्यादाओं के निर्वाह करने की जिम्मेदारी सिर्फ उसकी ही है। वर्ग और वर्ण कोई हो, सेक्स या शील की मर्यादाएँ तोडगी तो उसे उसकी जगह दिखा दी जाएगी।''[5] भारतीय संस्कृति में नारी को विशेष महत्व दिया जाता है, उसे देवी स्वरुपा माना जाता है। लेकिन यह विचार केवल सैंध्दांतिक रुप में दिखाई देता है न कि व्यवहारिक रुप में। यदि स्त्री देवीस्वरूपा है तो उस पर समाज का इतना बंधन क्यों? क्यों पुत्री जन्म पर समाज शोक मनाता है। जन्म लेते ही उसे परायाधन कहते हैं? क्यों जन्म से पहले ही कन्या भ्रुण की हत्या करवा दी जाती है? धार्मिक कुरीतियों परम्पराओं के नाम पर उनकी बलि चढ़ा दी जाती है? आखिर ऐसा कब तक चलेगा और क्यों ? स्त्री के प्रति ऐसी दोहरी मानसिकता क्यों एक तरफ स्त्री को देवी कहा जाता है तो दूसरी ओर सामाजिक बंधनों के जकडनों में जकडकर उसका जीवन बेहाल का दिया जाता है। आदिकाल से ही स्त्री के प्रति समाज का दृष्टिकोण अमानवी और उत्पीड़क रहा है। तभी तो समन्वयवादी, मानवीय दृष्टिकोण के महान कवि तुलसीदास कहते हैं ढोल, गंवार, शुद्र पशु नारी सकल ताड़न के अधिकारी। तो वहीं कबीर दास नारी को माया मानकर कहतें हैं नारी को झाईं पड़ी अंधा होत भुजंग क्या गति जो नित नारी संग। इन पंक्तियों से तो यही समझ आता है कि सांस्कृतिक वर्चस्व में स्त्रियों के प्रति समाज का नजरिया कितना अभद्र और अमानवीय रहा है। पुरुषोत्तम दास अग्रवाल जी लिखतें हैं –''यह सामाजिक मान्यता जिस मर्यादा को व्यक्त कर रही है, उसका कर्ता–धर्ता सवर्ण पुरुष है। उसी को दुनियाँ चलानी है और दुनियाँ को चलाने के लिये शुद्र, गंवार, और नारी से ठीक उसी प्रकार काम लेना पड़ता है जैसे ढोल और पशु से लेना होता है।''[6] भारतीय सांस्कृतिक वर्चस्व अपने प्रभुत्व को बनाये रखने के लिये स्त्री को आवश्यकतानुसार समय–समय पर प्रताड़ित करना जरुरी समझता है जिससे नारी पूर्णरुपेण बंधकर उसके अधीन रहे–''पुरुष प्रधान समाज में नारी माँ नहीं है, बहन नहीं है, मात्र षरीर है और जिसे यह रौंदते हैं।''[7]

पुरुषवादी विचारधारा वाला समाज नारी को प्रताड़ित करने के लिए धर्म का भी सहारा लेता है। और धार्मिक कुरीतियों, और रीति रिवाजों का निर्वाहन के लिए जबरन उस पर थोप देता है। धार्मिक रीति रिवाजों, कुरीतियों परम्मपराएँ सब पुरुष निर्मित है और धर्म के ठेकेदारों ने पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित करने के लिए स्त्री के माथे पर थोप दिया और इसका निर्वाह नहीं करने वाली स्त्री का धर्म के नाम पर वध को भी उचित ठहराया है और धार्मिक रीति रिवाज के नाम पर स्त्री को अुशासित कर उसे अपना उपनिवेश बना लिया है। सिमोन लिखती है –''विधायकों, पुरोहितों, दार्शनिकों, लेखकों और वैज्ञानिकों ने अब तक यह दिखाने की चेष्टा की है कि औरत की अधीनस्थ स्थिति स्वर्ग में हीं बनाई गई। जिस धर्म का अन्वेषण पुरूष ने किया, वह उसकी अधिपत्य की इच्छा का अनुचिंतन है।''[8] धार्मिक परम्परा रीति रिवाजों के द्वारा पुरूष समाज ने स्त्रियों को अपने बंधन में बांधकर रखने का सभी कालों में प्रयास किया तभी तो विधवा स्त्रियों के जीवन का दुर्दशा की पराकाष्ठा सती प्रथा है जिसे धर्म के नाम देकर पति के मृत्यु पश्चात उसके आर्थिक अधिकारों को छिनकर

Jai Maa Saraswati Gyandayini ISSN: 2454-8367
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Vol. 3, Issue-I
July 2017
Impact Factor : 4.032 (IIJIF) UGC Approved e-Journal No. - 43919 e-ISJN: A4372-3118

सामाजिक और मानसिक दबाव डालकर मृत्यु के गर्भ में धकेल दिया जाता है। सामाजिक बंधन और धार्मिक कुरीतियाँ स्त्री के समस्त अधिकारों को छिनकर उनको बद से बतर जीवन जीने के लिए विवश कर देती है। पुरूषोत्तम अग्रवाल कहतें हैं –''एक बात निःसंकोच कही जा सकती है कि सभी परम्पराएँ और सभ्यताएँ स्त्री के संदर्भ में कहीं न कहीं गहरी हीनता ग्रंथि और अपराधबोध से ग्रसित है, इसलिए हिन्दुत्व के ठेकेदार स्त्री की दुर्दषा के लिए इस्लाम को कोसता है और इस्लाम के मुजाहिद हिन्दु धर्म को तथा दोनों मिलकर धर्म निरपेक्ष आधुनिकता को।''[9] सदियों से पुरूषसत्तात्मक समाज ने धार्मिक परम्पराओं और कुरीतियों, रीति रिवाजों के आधार पर स्त्रियों को हीन और कमजोर बनाने में सफल होता रहा है –''हिन्दू समाज ने मानो अपनी सारी जागरुकता, समस्त अनुभवप्रियता, को विश्व के अशेष पापाचारियों से बचाकर, अबला नारी पर केंद्रित कर दिया है–उसकी पुलिस मैनी दृष्टि सदैव नारी का अनुगमन करती रहती है। मानो हिंदुस्तान का सबसे शंकनीय जीव, उसका सबसे अधिक भ्रष्ट प्राणी नारी ही है। नारी विश्वसनीय नहीं है, नारी जिम्मदार नहीं है।''[10]

भारतीय समाज में दलित आदिवासी और अल्पसंख्यक समुदायों की नारियों की स्थिति प्राचिन काल से ही अपमान अत्याचार और शोषण की वजह से दयनीय हो गयी है। उनके साथ घरेलू और सामाजिक हिंसाएँ बड़े पैमाने पर होने के कारण नारियाँ वर्तमान समय में भी उस स्थिति से बाहर नहीं आ पा रहीं है। क्योंकि वर्तमान समय में भी दलित आदिवासी नारियों का शोषण कर उनको निर्वस्त्र कर गाँवों में घुमाया जाता है और अपमानित कर मरने के लिए छोड़ दिया जाता है। आज भी काफी जगहों पर नारी डायन चुडैल के नाम पर प्रताड़ित और शोषित हो रही है, क्योंकि डायन चुडैल का नाम देकर महिलाओं को सामुहिक रुप से पत्थरों से मारा जाता है या फिर वेश्यावृत्ति के घटिया मार्ग में धकेल दिया जाता है। पूर्व के समय में बालिकाओं की देवदासी प्रथा के नाम पर बलि चढ़ा उनका शोषण किया जाता रहा है और यह प्रथा आज भी कुछ जगहों पर देखने को मिल रहा है। लेकिन इसके खिलाफ आवाज उठाने वाला कोई भी नहीं है। वर्तमान समय में भी दलित आदिवासी और अल्पसंख्यक समुदायों की स्त्रियों के सामने जातिवाद और पितृसत्तात्मक समाज की चुनैतियाँ बाहें फैलाये खड़ी है ।

भारतीय समाज मूलतः पितृसत्तात्मक समाज रहा है जहाँ स्त्री के स्वतंत्रता और अस्तित्व को कोई विशेष महत्व नहीं दिया जाता रहा है। लेकिन वर्तमान समय में स्त्री, नारी जागरण, नारी विर्मश के कारण जागृत और शिक्षित होकर स्वतंत्र रुप से अपना अस्तित्व निर्मण के लिए जागृत हो गयी है। और परम्परागत मूल्यों का विरोध कर एक नवीन नैतिकता पूर्ण मूल्यों का निर्माण कर समाज में स्त्री पुरुष के भेद को समाप्त करना चाहती है। भरतीय नारी अब घरेलू बंघनों से मुक्त होकर बाहर निकलने लगी है और वैधानिक अधिकारों का इस्तमाल कर अपना अस्तित्व निर्माण करने लगी है उसके बावजूद भी पूर्ण चेतना के आभाव में नारी आज भी पुरुष सत्ता के

Jai Maa Saraswati Gyandayini ISSN: 2454-8367
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Vol. 3, Issue-I
July 2017
Impact Factor : 4.032 (IIJIF) UGC Approved e-Journal No. - 43919 e-ISJN: A4372-3118

शोषण का शिकार हो रही है। क्योंकि स्त्री के बुद्धिमता और विचारों को नजर अंदाज कर उसके रुप सौंदर्य को महत्व देकर पुरुष समाज स्त्री को गुमराह करता आ रहा है–शैलजा माहेश्वरी लिखती है ''नारी के अनेक रुपों, गृहणी, जननी, देवी भगनी आदि को भूलकर समाज नारी शरीर के सौंदर्य सरोवर में सतह पर ही गोते खाता रह गया।''[11] पुरुष समाज स्त्री सौंदर्य को महत्व दे कर सिर्फ अपना उल्लू साधता रहा है जिससे नारी परम्परागत बंधनों का जंजीर तोड़कर आगे न बढ़ सके –''यदि पुरुष का वश चले तो एक बार फिर सांमतशाही परंपरा आरम्भ कर दे, जिसमें नारी बाहर का सारा जीवन भूलकर केवल घर की होकर रह जाए। चौका –चूल्हे से फुर्सत पाये तो पति का मुख चंद्र निहार ले।''[12]

वर्तमान समय में नारी अब किसी के हाथों की कठपुतली बन के नहीं रहने वाली बल्कि वह अपने अधिकारों और अस्तित्व को पहचान चुकी है और अपने व्यक्तित्व निर्मण के लिए निरंतर संघर्ष कर अपना मुकाम हासिल कर रही है। षिक्षा के प्रचार–प्रसार के कारण सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, और दार्शनिक स्थितियों में नारी की विचारधाराओं में काफी परिवर्तन आया है और नैतिकता के पुराने अर्थ एवं मापदण्डों को ही बदल के रख दिया है। आधुनिक यांत्रिकता एवं विज्ञान के विकास ने धर्म संबंधी परम्परागत मूल्यों को विघटित कर दिया है इसलिए नारी परंपरागत, दार्शनिक, धार्मिक, और सामाजिक पुरातनपंथी मूल्यों के प्रति अनास्था का शव रखते हुए धार्मिक कर्मकाण्ड़ों, रीति–रीवाजों और नैतिक विश्वासों को अर्थहीन मानने लगे हैं क्योंकि नारियाँ ऐसे धर्म और नैतिकता को मानते हैं, जो मानव के व्यक्तित्व विकास में मदद करे–'' स्त्री पुरुष की सहयोद्धा हो, साथ लड़े, साथ मरे और एक दूसरे से अंश लेकर दोंनों का व्यक्तित्व बने, स्त्री को घर के तहखाने में बंदी न किया जाए, उसकी प्रतिभा को मुक्त किया जाये, नारी की दशा पहले से ही दैयनीय रही है और वर्तमान समय में भी कोई खास परिवर्तन नहीं आया है। लेकिन अब नारी शिक्षा ग्रहण कर अपने अधिकारो के प्रति जागरुक होने अर्थोपार्जन के लिए भी, ताकि उसका भी स्वतंत्र अस्तित्व हो।''[13] नारी सामाजिक और आर्थिक मूल्यों के बंधनों को तोड़कर बाहर आने लगी है, और समाज से ही नहीं बल्कि अपने आप से भी संघर्ष कर रही है जिसके फलस्वरुप वर्तमान समय में स्त्री–पुरुष समानता से लोगों के विचारों में भी बदलाव आने लगा है।

निष्कर्षः–

आदिकाल से ही नारी शोषित होती रही है और आज भी शोषित हो ही रही है, बस शोषित हाने के तरीके बदल गये है। लेकिन वर्तमान समय में नारी शिक्षा ग्रहण कर धार्मिक, सामाजिक पुरातन पारंपरिक संस्कारों, मान्यताओं, को अस्वीकार कर एक नये मानव मूल्यों की स्थापना पर विशेष जोर दे रही है। जिससे जातिगत, लिंगभाव, धार्मिक, और पितृसत्तात्मक समाज के रुढ़ मान्यताओं को खत्म कर स्त्री पुरुष समानता की स्थापना हो सके। धर्म के प्रति लोगों में जो अंधविश्वास, अंधभक्ति है उसे बौद्धिक नारी वर्ग की शिक्षा ने तोड़ नये धार्मिक मूल्यों को स्थापित करने की कोशिश कर रही है। परंपरागत नैतिक, पारिवारिक, सामाजिक

Jai Maa Saraswati Gyandayini ISSN: 2454-8367
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Vol. 3, Issue-I
July 2017
Impact Factor : 4.032 (IIJIF) UGC Approved e-Journal No. - 43919 e-ISJN: A4372-3118

मान–मर्यादाएं जो अपनी अर्थवत्ता खो चुकी है उसे त्याग कर आज नारी संविधान का अपने व्यक्तित्व निर्माण एंव विकास और अपनी अस्तित्व, अस्मित्ता की रक्षा के लिए उपयोग कर रही हैं। वर्तमान समय में नारी की स्वतंत्रता को बाहरी तौर पर स्वीकार तो किया जाता है पर आंतरिक तौर पर आज भी नहीं। अपनी पहचान बनाने के लिए नारी की दुविधग्रस्त स्थिति, और संघर्षोवृत्ति व्यापक पैमाने पर दिखने को मिल रही है।

संदर्भ–ग्रंथः

1. राजेन्द्र यादव, आदमी की निगाह में औरत, राजकमल प्रकाषन,नई दिल्ली,1992, पृ.सं 5।
2. हिन्दी पॉकेट सीमोन द बउवार, स्त्री उपेक्षिता, अनुवाद प्रभाखेतान, बुक्स, नई दिल्ली 2002, पृ. सं 23।
3. तसलीमा नसरीन, नष्ट लड़की नष्ट गद्य, अनु मुनमुन सरकार, वाणी प्रकाषन, दिल्ली ,1995 पृ.सं 116।
4. बलराज सिहमर, मानव मुल्य और स्वतांत्र्योत्तर, हिन्दी उपन्यास, खामा पब्लिषर्स, पृ. सं 78।
5. राजेन्द्र यादव, हंस नवम्बर–दिसम्बर, 1994, पृ.सं 7।
6. पुरुषेत्तम अग्रवाल, संस्कृति वर्चस्व और प्रतिरोध, राधाकृष्ण प्रकाषन, दिल्ली 1995, पृ.सं 68।
7. सीमोन द बउवार, स्त्री उपेक्षिता, अनुवाद प्रभाखेतान,हिन्दी पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली 2002, पृ. सं 28।
8. तसलीमा नसरीन, औरत के हक में, वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली 1995, पृ.सं 47।
9. देवराज, पथ की खोज, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणासी, प्रथम संस्करण,1951, पृ.सं 155।
10. डॉ मुक्ता त्यागी, समकालीन महिला उपन्यासों में नारी–विमर्ष, अमन प्रकाषन, प्रथम संस्करण, 2012,पृ. सं 25।
11. बलराज सिहमर, मानव मुल्य और स्वतांत्र्योत्तर, हिन्दी उपन्यास, खामा पब्लिषर्स, पृ. सं 99।
12. वही 229।
13. वही 86।